शब्द-ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 जनवरी 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

चित्रा मुद्गल के उपन्यासोंमें नारी विमर्श

देवकन्या महावर (शोधार्थी हिंदी)
डॉ. अनिता वर्मा (शोध निर्देशक)
आचार्य (हिन्दी)
राजकीय कला महाविद्यालय
कोटा, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

नारी विमर्श एक ऐसा विमर्श है जो नारी के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न पहलुओं की समीक्षा करता है। यह नारी के शोषण और उत्पीड़न के विरुद्ध आवाज बुलंद करता है और नारी के अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करता है। नारी विमर्श साहित्य के लिए नित्य नए ज्वलंत मुद्दे उपलब्ध करवा रहा है। अनेक पुरुष तथा महिलाएं नारी समस्याओं को लेकर रचनाएं लिख रहे हैं। इन रचनाओं में परिवर्तित वर्तमान काल की स्थितियों का वर्णन तो होता ही है। साथ ही भूतकाल के आधार पर भविष्य की दिशाओं को स्वस्थ बनाने के प्रयास भी दिखाई देते हैं। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध के दशकों में भारतीय कवयित्रियों तथा लेखिकाओं ने प्रतिरोध के स्वर में मुखर होकर यह जता दिया है कि उसकी समस्याओं के समाधान और उसकी अपेक्षाओं-आकांक्षाओं का निर्णय अकेला पुरुष नहीं कर सकेगा। समाज को उसके अस्तित्व को स्वीकार करना होगा। पितृ सत्ता द्वारा तय होती व्यवस्था के विपरीत आज संविधान, कानून, लोकतंत्र आधारित नियमावली स्थान लेती जा रही है।

बीज शब्द : *उपन्यास, नारी विमर्श, उत्पीड़न, सामाजिक संघर्ष*

भूमिका

साहित्य सृजन बहुआयामी आत्म अभिव्यक्ति है जो एक साथ कई उद्देश्यों का संधान करता है। चित्रा मुद्गल हिंदी की एक प्रमुख कथाकार और उपन्यासकार हैं। उन्होंने अपने साहित्य में नारी जीवन के विभिन्न पक्षों का यथार्थवादी चित्रण किया है। उनकी रचनाओं में नारी को एक सशक्त और स्वायत्त ईकाई के रूप में प्रस्तुत किया गया है। चित्रा मुदगल ने उपन्यास, कहानी आदि विधाओं में हिन्दी जगत को एक नया आयाम दिया है।

श्रीमती चित्रा मुदगल ने विविध जीवन संदर्भों पर लेखन किया है। वह जहाँ एक ओर आधुनिक मानवीय मूल्यों की स्तब्ध कर देने वाली तस्वीर को गहरी संवेदना से उकेरती हैं, वहीं अपने साहित्य में आज की नारी का संघर्ष, स्वाभिमान और विद्रोह को अपनी कलम के माध्यम से उतारने का प्रयास किया है। चित्रा मुद्गल की रचनाएं नारी विमर्श के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान है। उनकी रचनाओं में नारी की समस्याओं और संघर्षों को यथार्थवादी रूप से प्रस्तुत किया गया है। ये रचनाएं नारी के अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित करती हैं। चित्रा मुद्गल के लेखन में जहाँ निरंतर खाली होती जा रही मानवीय संवेदनाओं का चित्रण हुआ है वहीं दूसरी ओर नए जमाने की रफ्तार में फँसी ज़िन्दगी की मजबूरियों का चित्रण बड़े सलीके से हुआ है।

इनके पात्र समाज के सभी वर्ग से आते हैं और उनकी जिंदगी के समूचे दायरे का अध्ययन करते हुए आगे बढ़ते है। इनकी रचनाओं में दलित, शोषित वर्ग को विशेष स्थान मिला है। उनकी व्यक्त करने की विशिष्ट शैली मन को उद्वेलित तथा हृदय को स्पर्श करने की क्षमता रखती है। लेखिका ने अपने चारों और घटने वाली घटनाओं को शब्दों में बाँधकर सजीवता से सृजन किया है।

नारी विमर्श की प्रासंगिकता

चित्रा मुद्‌गल की रचनाओं में नारी विमर्श के कई महत्वपूर्ण आयामों का चित्रण हुआ है। उनकी रचनाओं में नारी की निम्नलिखित समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है :

सामाजिक और आर्थिक उत्पीड़न : चित्रा मुद्‌गल की रचनाओं में नारी को सामाजिक और आर्थिक रूप से उत्पीड़ित दिखाया गया है। उनके उपन्यासों में स्त्रियों को पितृसत्ता के दबाव में जीने के लिए मजबूर दिखाया गया है। वे घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, बाल विवाह, भ्रूण हत्या आदि जैसी सामाजिक समस्याओं से पीड़ित हैं।

सांस्कृतिक रूढ़िवाद : चित्रा मुद्‌गल की रचनाओं में नारी को सांस्कृतिक रूढ़िवाद के बंधनों में जकड़ा दिखाया गया है। उनके उपन्यासों में स्त्रियों को परंपरागत मूल्यों और आदर्शों के अनुरूप रहने के लिए मजबूर दिखाया गया है। वे नारी स्वतंत्रता और स्वायत्तता के लिए संघर्ष करती हैं।

आर्थिक निर्भरता : चित्रा मुद्‌गल की रचनाओं में नारी की आर्थिक निर्भरता को एक प्रमुख समस्या के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उनके उपन्यासों में स्त्रियां आर्थिक रूप से पुरुषों पर निर्भर होती हैं। यह उनकी स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता को सीमित करता है।

चित्रा मुद्‌गल के प्रमुख उपन्यासों में नारी विमर्श के विभिन्न आयामों का चित्रण हुआ है। चित्रा मुद्‌गल जी के प्रसिद्ध उपन्यास इस प्रकार हैं :

1 एक जमीन अपनी 1973, 2 आवां 1990, 3 गिलिगडु 2002, 4 पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा 2016

एक जमीन अपनी : चित्रा मुदगल द्वारा 1973 में रचित अत्यन्त चर्चित उपन्यास है। आधुनिक काल में ऐसे उपन्यासों के सृजन का चलन बढ़ा है। इस उपन्यास में आज की व्यावसायिक उपभोगवादी संस्कृति में नारी के शोषण के नये तरीकों का एक विशेष स्तर पर सार्थक औपन्यासिक प्रस्तुति कर एक सफल उपन्यास लेखिका बन गई। उपन्यास ‘एक जमीन’ अपनी में चित्रा मुदगल ने मध्यवर्गीय परिवारों की दो लड़कियों नीता और अंकिता द्वारा दो तरह के चरित्रों को प्रस्तुत किया है। नमिता आधुनिक सभ्यता की शिकार है तो अंकिता आदर्श नारी पात्र है। अंकिता स्वाभिमानी नारी है। वह पुरूष की गुलामी को सह नहीं पाती। सुधांशु के साथ पारिवारिक जीवन की शुरुआत में जब अंकिता को महसूस हुआ कि सुधांशु ने उसके मन को उसकी चाह को पहचानते हुए उसके ‘स्व’ को चिन्दी-चिन्दी कर दिया है। दोनों का एक साथ जीना दुर्भर हो गया, इसलिए परस्पर अलग होने का निर्णय लिया गया। बाद में जीवन के कई संदर्भ में अंकिता अकेलापन महसूस करती है। उपन्यास की दूसरे पात्र नीता का चरित्र अंकिता से ठीक विपरीत है। वह अपना जीवन मनमाने ढंग से बिताना चाहती है। वह बिना शादी किये अनेक पुरूषों के साथ रहती है एवं आधुनिक स्वच्छंद नारी का प्रतिनिधित्व करती है।

उपन्यास में इस मुख्य कथा के साथ-साथ कुछ अवांतर कथाएँ भी समानांतर चलती हैं, मसलन अंकिता के परिवार की कहानी, मेहता की घरेलू ज़िन्दगी और सबसे महत्वपूर्ण विज्ञापन जगत की सच्चाई से जुड़ी छोटी-छोटी कहानियाँ। उपन्यास में तिलक, शेट्टी, मेहता, मैथ्यू और सुधांशु जैसे पुरुष पात्रों के माध्यम से पुरुषों की अलग-अलग मानसिकताओं का भी उद्घाटन किया गया है। विज्ञापन एजेंसियों में होने वाले नारी-देह के इस्तेमाल और काम के लिए होने वाले छल-प्रपंचों का बड़ी बेबाकी से चित्रण किया गया है। उपन्यासकार द्वारा चकाचौंध की दुनिया के अंधेरों को पूरी निर्दयता के साथ उद्घाटित किया गया है। साथ ही अंकिता और मेहता की दोस्ती दिखाकर उपन्यासकार ने कहना चाहा है कि नारी और पुरुष न सिर्फ पति-पत्नी बल्कि अच्छे दोस्त भी हो सकते हैं। उपन्यासकार ने व्यावसायिक जगत की गला काट प्रतिस्पर्धा, कार्यस्थलों का महिला विरोधी वातावरण और आपसी खींचतान जैसी बातों का भी चित्रण किया है। सारांशतः इस उपन्यास में विज्ञापन जगत की कठोर सच्चाइयों के साथ-साथ वैवाहिक संबंधों की विडम्बना और मनुष्य के व्यक्तिगत संघर्ष को मर्मस्पर्शी तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

'आवां' उपन्यास में लेखिका चित्रा मुद्गल ने नारी विमर्श का बृहद आख्यान किया है। लेकिन इसके सरोकार उससे कहीं ज्यादा बड़े हैं। संपूर्ण नारी विमर्श से भी ज्यादा श्रमिकों के जीवन और श्रमिक राजनीति के ढेर सारे उजले-काले कारनामों तक फैले हुए हैं। जिसकी जमीन भी मुम्बई से लेकर हैदराबाद तक फैल गई है। उसमें दलित जीवन और दलित विमर्श के कई कथानक अनायास आ गए हैं। इस रूप में इसे आज के नारी विमर्श के साथ-साथ दलित विमर्श का महाकाव्य भी कहा जा सकता है, जिसे लिखने की प्रेरणा चित्रा मुद्गल को मुम्बई में जिए गए अपने युवा जीवन से मिली। इस रूप में यह उपन्यास लगभग पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करने वाला हिन्दी उपन्यास है। बहुत बड़े फलक का उपन्यास। सही अर्थों में एक बड़ा उपन्यास, जिसमें लेखिका की अकूत अनुभव संपदा काम आयी है। 'आवां' उपन्यास में समाज सेविका, मध्यवर्गीय नारी, मजदूर, निम्नवर्ग नारी, उच्चवर्गीय जीवन बिताती नारी आदि का चित्रण है। इसमें चित्रित स्त्रियों की मुख्य एवं सबसे महत्वपूर्ण समस्या यौन शोषण और श्रम शोषण की है। नमिता इस उपन्यास की प्रमुख पात्र है जो पढी-लिखी है। उसका चरित्र संघर्षशील, महत्वाकांक्षी, आधुनिक मूल्यों के प्रति सचेत युवती के रूप में उभरा है। नारी शोषण का जिक्र इस उपन्यास के आरंभ से अन्त तक है। उपन्यास में नमिता पाण्डे यौन शोषण का शिकार बनती है।"1

'आवां' श्रमिक राजनीति पर लिखा गया उपन्यास है, लेकिन गहराई में जाएँ तो हर जगह नारी विमर्श की छायाएँ मंडराती नज़र आती हैं। 'आवां' उपन्यास की नायिका नमिता पांडे कामगार अघाड़ी में ट्रेड यूनियन का काम करने वाले मज़दूर नेता देवीशंकर पांडे की बेटी है, जो एक श्रमिक आंदोलन के दौरान हुए जानलेवा हमले में बच तो गए, लेकिन पक्षाघात के शिकार हो गए, चलने-फिरने तक से महरूम। उनकी पत्नी क्रूर और कर्कशा है, जो उन्हें ही नहीं, अपनी बड़ी बेटी नमिता को भी हमेशा जली-कटी सुनाती रहती है। माँ-बेटी पापड़ बेलने का काम करके किसी तरह गृहस्थी की गाड़ी को चलाने की कोशिश करती हैं। फिर अन्ना साहब उसे अपने पिता की जगह कामगार अघाड़ी की नौकरी दे देते हैं। बेटी जैसा

मानते और कहते हुए भी एक दिन अन्ना साहब उसका यौन शोषण करने का प्रयास करते हैं तो नमिता का मोहभंग हो जाता है और वह कामगार अघाड़ी छोड़कर अन्यत्र नौकरी ढूँढ़ती है। एक मैडम अंजना बासवानी उसे संजय कनोई जैसे धनपति के स्वर्णिम जाल में फँसा देती है। कामगार अघाड़ी में अन्ना साहब जो करते हैं, सो करते हैं, एक उभरता दलित श्रमिक नेता पवार नमिता से विवाह कर खुद को अन्ना साहब के समानांतर बड़ा नेता बनने के सपने पालने लगता है। नमिता उसे पसंद भी करती है, लेकिन पवार के जातिवादी जाल में फँसना उसे मंजूर नहीं। लेकिन संजय कनोई का जाल बहुत बड़ा है और महीन भी, जिसे काफी समय तक नमिता समझ नहीं पाती। वह तब समझ पाती है जब संजय कनोई की औलाद की बिनब्याही माँ बनने जा रही होती है। अन्ना साहब की हत्या का समाचार पाकर वह सन्न रह जाती है और सदमे से गर्भपात हो जाता है। नमिता खुद भी माँ बनने की बहुत इच्छुक नहीं थी। गर्भ गिरने को संजय कनोई नमिता के ही किसी प्रयास का कारण समझ कर नमिता से लड़ता है। संजय कनोई कहता है कि जानती हो बाप बनने के लिए मैंने तुम्हारे ऊपर कितना खर्च किया ? उस मामूली औरत अंजना बासवानी की क्या औक़ात कि तुम्हारे ऊपर पानी की तरह पैसा बहा सके ? उसका जिम्मा सिर्फ़ इतना भर था कि वह मेरे पिता बनने में मेरी मदद करे और सौदे के मुताबिक अपना कमीशन खाए। लेकिन इसके बाद नमिता संजय कनोई को हमेशा-हमेशा के लिए छोड़ देती है।

गिलिगडु : (2002) चित्रा मुद्‌गल द्‌वारा लिखित उपन्यास 'गिलिगडु' वृद्धों की समस्या को केंद्र में रखकर लिखा गया। इसमें तेरह दिन की कहानी के माध्यम से उपन्यास के मुख्य पात्र सेवानिवृत्त सिविल इंजीनियर बाबू जसवंत सिंह व सेवानिवृत्त कर्नल स्वामी विष्णु नारायण स्वामी के जीवन का पूरा खाका ही नहीं अपितु आज के बदलते जीवन मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में घर व परिवार में बुजुर्गों की वास्तविक स्थिति का चित्रण बड़ी बेबाकी से हुआ है। इस उपन्यास में प्रमुख रूप से संयुक्त परिवार का बिखराव, परिवार में बुजुर्गों की भूमिका और वर्तमान पारिवारिक माहौल में उनकी वास्तविक स्थिति को कई प्रसंगों के माध्यम से उजागर किया गया है।2

पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा : चित्रा मुद्‌गल द्‌वारा लिखित उपन्यास मानवीय बिन्दुओं को ध्यान में रखकर लिखा गया एक अत्यंत मर्मस्पर्शी उपन्यास है। पत्राचार शैली में लिखे गए इस उपन्यास में अधिकतर पत्रों के अन्त में लिखा गया तेरा डिकरा उर्फ़ विनोद उर्फ़ बिन्नी उर्फ़ बिमली, अपने आप में काफी कुछ कह जाता है। उपन्यास पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा का पात्र बिन्नी अपने परिवार से परित्यक्त होने के बाद काल की कठिनाइयों, समस्याओं, समाज के तथाकथित सम्मानित एवं कर्ता-धर्ता वर्ग के द्‌वारा किये जाने वाले अत्याचारों आदि का अपनी माँ के नाम लिखे गए पत्रों के माध्यम से हमारे पूरे समाज से प्रश्न करता हुआ दिखाई पड़ता है। अपनी प्रारंभिक शिक्षा के दौरान विनोद स्वयं को प्रमाणित करता है कि वह किसी भी मायने में अपने सहपाठियों से कम नहीं है। फिर चाहे खेल-कूद हो या पढाई-लिखाई, सबमें अव्वल ही रहता है। अपनी माँ, पिता और भाई के लिए उसके हृदय में अपार प्रेम है तो छोटे भाई के लिए अपार स्नेह।

शब्द-ब्रह्म E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

शारीरिक अथवा मानसिक बल हो या कोई और विषय, किसी भी मायने में वह किसी आम इंसान से तनिक भिन्न नहीं, फिर परिवार और समाज से इस परित्याग का कोई पुख्ता कारण उसे समझ नहीं आता। विनोद कहता है, “जननांग विकलांगता बहुत बड़ा दोष है लेकिन इतना बड़ा भी नहीं कि तुम मान लो कि तुम धड़ का मात्र वही निचला हिस्सा भर हो। तुम्हारे हाथ-पैर नहीं हैं, सब वैसा ही है, जैसे औरों के हैं। यौन सुख लेने-देने से वंचित हो तुम, वात्सल्य सुख से नहीं!”3 लिंग दोष को सर्वोपरि मान लेने वाले नजरिये पर प्रश्नचिह्न लगाता हुआ विनोद का उपर्युक्त कथन दरअसल हमारी सामाजिक व्यवस्था के दोहरे मापदंड को भी उजागर करता है। समाज शारीरिक अथवा मानसिक रूप से विकलांग लोगों को तो स्वीकार कर लेता है, परन्तु लिंग दोष को तो शारीरिक अक्षमता की श्रेणी में भी रखने को तैयार नहीं होता है। पात्र विनोद जैसे लोगों की मात्र इतनी-सी शारीरिक अक्षमता आजीवन उनके पूरे वजूद पर हावी रहती है।

“कन्या भ्रूण हत्या के दोषी मातापिता अपराधी हैं। उससे कम दंडनीय अपराध नहीं जननांग दोषी बच्चों का त्याग।”4

जब कहा जाता है कि भिक्षावृत्ति का त्याग करें या कोई और व्यवसाय अपनाएं, तब प्रश्न उठता है क्या किया जाय ? कोई और व्यवसाय का चयन करना क्या बिना मुख्य धारा के लोगों को शामिल किये संभव है ? क्या समाज इतना परिपक्व हो चुका है कि किन्नर को अपनाने के लिए सहज है ? क्या हम उन्हें एक शिक्षक या डॉक्टर या इंजिनियर के रूप में स्वीकार कर पाएंगे, शायद नहीं ? सर्वप्रथम हम उन्हें एक इंसान के रूप में तो अपनाएँ। परिवार और समाज द्वारा किया गया परित्याग उन्हें पथभ्रष्ट करने में कोई कसर नहीं छोड़ता। एक ऐसा व्यक्ति जिसके बारे में समाज को चिंता नहीं, वह समाज की चिंता क्यों करे ? इसी कारण कुछ किन्नर अपराधिक प्रवृत्तियों में भी लिप्त हो जाते हैं। पूनम के चरित्र के माध्यम से लेखिका ने समाज के रसूखदार लोगों को बेनकाब करने का प्रयास किया है। पात्र पूनम समाज के कुछ अय्याशों की पाशविकता का शिकार बनती है। विधायक की कोठी पर नृत्य के उपरांत जब वह अपने कपड़ों को बदल रही होती है तब विधायक का भतीजा और उसके मित्र उसके कक्ष में उससे सामूहिक बलात्कार करते है। चूँकि ये लोग समाज के रशूखदार परिवार से ताल्लुक रखते हैं, सारे मसले को एक नया रूप देकर, दबा दिया जाता है। इस पूरे प्रकरण पर ना कोई न्याय की बात करता है और न ही कोई पुलिस केस होता है। इस पूरे पाशविक प्रकरण को महज बच्चों की एक गलती का जामा पहना दिया जाता है। क्या किन्नर की शारीरिक पीड़ा का कोई मोल नहीं ? क्या उस पर हुआ अत्याचार मानवीय दृष्टी से जायज है ? ऐसे प्रकरण पर पूरा समाज गूंगा और बहरा बन जाता है। स्वयं किन्नर समुदाय अन्याय को मौन रूप से सह लेता है। शारीरिक रूप से सशक्त, तालियाँ पीटते, गालियाँ देते, झगड़ालू, जिद्दी ये लोग कितने अकेले हैं।”5

उपन्यास संवेदनाओं का अविरल धारा प्रवाह है। उपन्यास समाज के चेहरे से उसके मुखौटे को अपने प्रश्नरूपी नाखूनों से परत-दर-परत कुरेद-कुरेद कर निकालता है। चित्रा मुदगल जी के उपन्यास सामाजिक जीवन की वास्तविकाताओं पर आधारित होने के कारण, नारी जीवन के अनुछुए, पहलुओं पर प्रकाश डालने की कोशिश

करने के साथ ही शोषित नारी के प्रति अपनी हमदर्दी विद्रोहात्मक रूप में चित्रित की है, जीवन की विविध समस्याएं उपन्यास में स्वत: जाहिर हुई है।

निष्कर्ष

चित्रा मुद्गल आधुनिक उपन्यासकारों कहानीकारों की प्रतिनिधि साहित्यकार है। चित्रा मुद्गल की रचनाएं नारी विमर्श के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान हैं। उनके उपन्यासों के माध्यम से उनके साहित्य में नारी की स्थिति उसके सफल होते व्यक्तित्व पर विचार किया गया है। उनकी रचनाओं में नारी की समस्याओं और संघर्षों को यथार्थवादी रूप से प्रस्तुत किया गया है। चित्रा मुद्गल नारी विमर्श के क्षेत्र में कुछ नए आयामों को छुआ हैए संघर्ष किया है और प्रताड़ना के विरुद्ध आवाज बुलंद की है। उनके पात्रों ने उनकी लेखनी का स्पर्श पाकर विवश अवश जीवन से बाहर आना सीखा है। इनकी उपन्यासों में नारी के प्रति अनेक अनुभव जनित विचारों में पर्याप्त वैविध्य है। उपन्यासों के माध्यम से चित्रा मुद्गल हमें कई स्तरों पर सोचने पर मजबूर करती हैं। इनकी कहानियां व उपन्यासों में नारी को प्रचुर स्थान मिला है। नायिका स्वयं उपन्यास के कथ्य के साथ-साथ आगामी समाज व साहित्य की दिशा निर्धारित करती है। उनकी रचनाओं ने नारी विमर्श के क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान की है।

संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ. ज्योति शर्मा (2005), चित्रा मुद्गल के हिन्दी उपन्यासों में नारी विमर्श, शोध प्रबंध

2 गिलिगडु, चित्रा मुद्गल (2002), सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण

3 डॉ. आशारानी व्होरा (1990), चित्रा मुद्गल की हिन्दी

4 सुस्मित सौरभ (2016), इक्कीसवीं सदी और उपन्यासों में नारी मुक्ति का संघर्ष शोध प्रबंध, हिन्दी साहित्य में नारी लेखन, अपनी माटी, वर्ष 2, अंक 23

5 वीणा अग्रवाल (2002), नारी चेतना का विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली